पाठ 18. साइकिल की सवारी

पाठ का परिचय

लेखक जब भी किसी को साइकिल की सवारी करते या हारमोनियम बजाते देखते तो उन्हें अपने-आप पर दया आ जाती। लेखक दोनों ही विधाओं को नहीं सीख पाए। एक बार लेखक ने चुपचाप ही यह विद्या सीखने का निश्चय कर लिया। उन्होंने साइकिल सीखने के लिए फटे-पुराने कपड़े तलाश कर लिए। श्रीमती को उन कपड़ों को ठीक करने को कह दिया। प्रयत्न करके उन्होंने अपने लिए एक उस्ताद भी ढूँढ़ लिया। यही नहीं, साइकिल सिखाने का विद्यालय खोलने तथा स्वयं उसके प्रोफ़ेसर बन अच्छी आमदनी करने की योजना भी बना ली। पहले दिन साइकिल सीखने जाते समय लेखक ने पाजामा और अचकन दोनों उलटे पहन लिए। दूसरे दिन लेखक और लेखक की साइकिल दोनों अपने घर से थोड़ी दूर पर ज़ख्मी हो गए। उसके बाद भी वे मैदान में डटे रहे। आठ-नौ दिन में साइकिल चलाना सीख गए लेकिन उस दिन अपनी कला का प्रदर्शन करने के दौरान वह उसी ताँगे के नीचे आ गए जिसमें उनकी पत्नी और बच्चे सवार थे। पत्नी और बच्चों के सामने हुई इस बेइज़्ज़ती के बाद उन्होंने फिर कभी साइकिल को हाथ नहीं लगाया।

पाठ में निहित जीवन-मूल्य

कभी भी झूठे सपनों के पीछे न भागें। जो सोचें उसे पूरा अवश्य करें। जीवन में कुछ भी असंभव नहीं।

पाठ का वाचन

अध्यापक/अध्यापिका पाठ का कक्षा में वाचन करें। पाठ में आए हास्य के अंशों को पढ़कर बच्चों को समझाएँ। कठिन शब्दों के अर्थ बताएँ। बच्चों से एक-एक अनुच्छेद पढ़वाएँ। उच्चारण पर ध्यान दें। संवादों को उचित उतार-चढ़ाव के साथ बोलना सिखाएँ। पाठ पूरा होने पर बच्चों से एक-एक वाक्य के उत्तर वाले प्रश्न पूछकर यह जानें कि पाठ उन्हें समझ में आया या नहीं। जैसे – लेखक साइकिल क्यों सीखना चाहते थे? लेखक ने पुराने कपड़ों के साथ क्या किया?

महत्वपूर्ण चर्चा

बच्चों से निम्नलिखित प्रश्न कर चर्चा करें –

- क्या साइकिल चलाना भी एक कला है?
- क्या तुम समझते हो कि साइकिल चलाना सीखने के समय पुराने कपड़े पहनना आवश्यक है?
- लेखक साइकिल चलाने का विद्यालय खोलने की कल्पना करते हैं। वैसी कोई कल्पना करना सही है या गलत?
- साइकिल चलाने की कला के अलावा और क्या-क्या कलाएँ हो सकती हैं?